कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट - 3

27 अप्रैल 2020

राहत COVID-19- भुला दिए गए ग्रामीण भारत को सहेजने का प्रयास

कार्यक्षेत्र की मुख्य गतिविधियां :

- हमने सम्पूर्ण देश के अपने नेटवर्क को सक्रिय किया और हमारी क्षेत्रीय टीमों के अलावा **100 से अधिक सहभागी संस्थाओं के साथ 20 राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशो** में काम शुरू हो गया है।
- अब तक हम 27,600 परिवारों तक तत्काल सहायता पहुँचा चुके है।
- स्थानीय सामुदायिक रसोइयों तक **26,000 किलो राशन** पहुंचाया गया जिससे **80,000 से अधिक लोगो के भोजन** का इंतज़ाम किया गया।
- स्वास्थ्य रक्षा संबंधी पहल: **78,789 फेस मास्क** तथा **35,688 से अधिक सेनेटरी पैड** बनाए गए।
- **85,400 लोगो तक तैयार भोजन** पहुंचाया गया।

स्वरुप बदलती आपदा

भारत में प्रवासी मजदूरों और ग्रामीण निवासियों पर विनाशकारी प्रभाव महामारी से बड़ी आपदा बन गया है। कुछ रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक वर्ष लगभग *90 लाख कर्मचारी कारखानों और निर्माण स्थलों में काम के लिए ग्रामीण भागो से शहरी क्षेत्रो में जाते है। यदि देखा जाए तो केवल निर्माण क्षेत्रो में ही *5 करोड़ 50 लाख दैनिक वेतन कर्मचारी कार्यरत है, यह बाकी क्षेत्रो के मुकाबले सबसे अधिक संख्या है।

इस देशव्यापी लॉक डाउन के समय में जहां एक तरफ गाँवों की ओर उल्टा पलायन शुरू हो गया है, जहाँ लोग खुद को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे है, बहुत से लोग अभी भी बिना संसाधनों के बीच रास्ते में फंसे हुए है। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। तत्काल रुप से।

*जन साहस रिपोर्ट- अदृश्य नागरिको की आवाजे।

इस लॉक डाउन के दौरान हमारी पहली प्राथमिकता है

- भूख और भूखमरी जैसी तत्काल आपदाओं से बचाना ताकि जरूरतमंद लोगो को अतिरिक्त क्षति न हो।

इस सम्बन्ध में चल रहा कार्य-

- अलग-अलग राज्यों में सामुदायिक रसोइयों तक सहायता पहुँचाना

- व्यापक स्तर पर जरुरी राशन वितरण
- उपेक्षित समुदायों तक पहुंचने के लिए विकेन्द्रित स्थानीय समाधान

हमारी रणनीति

स्थानीय किट के लिए स्थानीय उपज- गूँज टीमें किसानो से स्थानीय उपज लेने का प्रयास कर रही है, आलू, आम, और सब्जियों को ख़रीदा जा रहा है और इन्हे स्थानीय स्तर पर दी जा रही राहत किट में शामिल किया जा रहा है। यह स्थानीय स्तर पर लोगो की आर्थिक स्थिति और पोषण को सुनिश्चित करता है तथा परिवहन लागत को कम कर रहा है।

किट को अनुकूलित कर शीघ्र अभावो को भरा जा रहा है- भारत में गरीबी लोगो के जीवन में पहले से चल रही आपदा है। अब हालात और भी ज्यादा ख़राब हो रहे है और मानसून भी जल्द ही दस्तक देने वाला है। स्थानीय जरूरतों और उपलब्धता के अनुसार हम अलग-अलग जगहों पर विभिन्न प्रकार की वस्तुओ को शामिल कर रहे है, जैसे- मच्छरदानी और कॉएल, तिरपाल, अंडरगार्मेंट, तौलिया आदि (प्रसाधन के अतिरिक्त)।

कार्य क्षेत्र से जानकारी:

प्रभावित लोगो तक पहुंची तत्काल राहत सहायता

- **3,50,00 किलो राशन तथा अन्य आवश्यक सामग्री**, राशन किट तथा सामुदायिक रसोइयों के माध्यम से पहुंचाई गयी।
- **27,600 परिवारों** तक पहुंच
- **85,400 तैयार भोजन** लोगो तक पहुंचाया गया।

स्थानीय सामुदायिक रसोइयों को सहयोग

- **13 सामुदायिक रसोइयों** को **80,000 भोजन** के लिए **26,000 किलो राशन** के माध्यम से सहयोग।

अभावो को भरने के प्रयास तथा नेटवर्क की पहुँच को बढ़ाना

- **20 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो** में **100+ सहभागी संस्थाओ** के साथ कार्यो की शुरुआत।
- उद्योग जगत, संगठनों, तथा व्यक्तियों के साथ व्यापक स्तर पर काम।

स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल

- **78,789 फेस मास्क तथा 35,688 से अधिक सेनेटरी पैड** तैयार किए गए।

आंखों देखी:

बिहार में कुष्ठ रोगी बस्ती- बहिष्कार तथा भूख से जूझती

“मांगने को निकलते है चौक पर, बाजार में, गाँव में, मगर मार कर निकाल देते है”

यह कहानी उन लोगो पर प्रकाश डालती है जिनपर लॉक डाउन और कोविद महामारी की दोहरी मार पड़ी है। बिहार के मरजादवा गाँव (मैनाटाड ब्लॉक पश्चिमी चम्पारण) में कुष्ठ रोग पीड़ित परिवारों की एक बस्ती है, जो मुख्य सामजिक समूह से दूर स्तिथ है। यह मुख्य रूप से भीख मांगने और कूड़ा बीनने जैसे कामो पर निर्भर है तथा अपना जीवनयापन कर रहे है। हालांकि लॉक डाउन के पहले से ही वे हाशिये पर थे लेकिन इस दौरान उनकी स्तिथि पहले से ज्यादा ख़राब हो गयी है. वे बुनियादी जरूरतों जैसे रोज के भोजन के लिए भी संघर्ष कर रहे है। **“पहले दो-चार रूपये मिल जाते थे अब वो भी मुश्किल है”** ग्रामीणजन को ऐसी गलत धारणा है कि इस बस्ती में रहने वाले लोग ही 'कोरोना वायरस' फैला रहे है। लोग उन पर पथराव भी कर रहे है, अब डर के कारण कई दिनों से इन परिवारों ने बाहर कदम भी नहीं रखा है, जिसके परिणाम स्वरुप वह अन्न के बिना केवल नमक पर जीवन यापन करने को मजबूर हैं।

गूँज इन क्षेत्रो में कई वर्षो से काम कर रहा है। पहले चरण में हमारी टीम ने स्थानीय स्वयंसेवकों के साथ मिलकर पूरी कॉलोनी की सफाई की जिसके अंतर्गत राशन कार्ड वितरित की गई और अब हम उनके लिए पुनः काम करने और उनकी जरूरतों को पूरा करने की योजना बना रहे है।

पूरे भारत में 20 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशो में चल रहे राहत कार्य में हम विकलांग, आदिवासी, बुजुर्ग, किन्नर समुदाय, यौनकर्मियों आदि सबसे कमजोर और उपेक्षित समुदायों को प्राथमिकता देने की कोशिश कर रहे है, जो इस समय अपने जीवन निर्वाह के लिए संघर्षरत है।

हम वहाँ कार्यरत हैं... आपका साथ चाहिए...

शब्दों का मोल: मीडिया में गूँज की उपस्थिति

परिवारों की आजीविका के लिए सहायता, अधिक पढ़ने के लिए
https://bit.ly/3aG6EUq

प्रवासी श्रमिक पलायन कर रहे है यह कहना गलत क्यों…. सुने अंशु गुप्ता के विचार
https://bit.ly/3cLVnTV

अंशु गुप्ता द्वारा पोस्टकार्ड…कार्यो के पीछे के शब्द
https://www.youtube.com/watch?v=-9OCK1MUyh4

हमारा सहयोग कीजिये:

कार्य सुचारू रखने के लिए तथा आवश्यक खरीद और रसद के लिए **राशि सहयोग** महत्वपूर्ण हैं -
https://bit.ly/3b52CpJ

गूँज के लिये सहयोग राशि जुटाने के लिये आप **फंडरेज़िंग कैंपेन** शुरू कर सकते है और अपने नेटवर्क में प्रेषित कर सकते है। https://bit.ly/3ehor7p

थोक रूप में सामग्री सहयोग- https://bit.ly/2yR000h

गूँज संस्थापक अंशु गुप्ता द्वारा किये गए वेबिनार देखने के लिये
कोविद 19 के समय सामाजिक क्षेत्रो पर प्रभाव एवं प्रतिक्रिया- https://bit.ly/3b6saTj

अधिक जानकारी के लिए हमे mail@goonj.org पर लिखे।

जमीनी स्तर पर चल रहे कार्यो की अधिक जानकारी के लिए गूँज राहत कोविद पर देखे-https://bit.ly/2K1JH3e